भजन

तर्ज– जिस दिल में भरा था प्यार तेरा

सुध देने हमको आए हो,गम अपने भूल के बैठे हो
रूहों मैं तुम्हारा आशिक हूँ,अपनी वाणी में कहते हो

1–तुम्हीं उतर आए अर्श से,तुमने ही दिखाई खिलवत है
तुमने ही धाम अखण्ड दिया,तुमने ही दिखाई वाहेदत है
तुम हो समरथ भरतार मेरे,सब खोल खजाने बैठे हो
2–हद बेहद पार की बातों से,तुम साथ जगाने आए हो
जिस ख्वाब ने हमको भरमाया,वो ख्वाब हटाने आए हो
तुमही कायम सुख के धनी हो,पहचान कराने बैठे हो
3–अव्वल से आखिर तक कोई,जो द्वार बका के न खोल सके
चौदे तबकों की दुनिया में,कोई बोल अखण्ड न बोल सका
उस बेशक इल्म के सागर को,रूहों पे लुटाने बैठ हो
4–जबतक सब साथ न जाग उठे,तब तक तुमको आराम नहीं
इक इक रूह को सुध देनी है,इसके बिन दूजा काम नहीं
कुछ अपना आप नहीं रखा,सब न्यामत वार के बैठे हो